पंजाब केसरी
दिल्ली, रविवार
3 सितंबर 2023

एएसआई पिता अब करेंगे जज बेटी को सैल्यूट, सपना हुआ साकार

पिता बोले दतियाना गांव का नाम रोशन कर दिया, दिल्ली विश्वविद्यालय से की पढ़ाई

सतेन्द्र त्रिपाठी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): हर माता-पिता का सपना होता है कि एक दिन उनका बच्चा बड़ा होकर परिवार का नाम रोशन करे। इसे सपने को पूरा किया दिल्ली पुलिस में कार्यरत एक सहायक उप निरीक्षक (एएसआई) की बेटी ने उत्तर प्रदेश ज्यूडिशियरी की परीक्षा पास कर बेटी ने अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल कर दिया।

रोहिणी के संजय नगर में रहने वाले सत्य ब्रह्म दिल्ली पुलिस में एएसआई हैं और अभी साकेत कोर्ट में तैनात हैं, साल 1993 में वह बतौर सिपाही भर्ती हुए थे। वह मूल रूप से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में दतियाना गांव के रहने वाले हैं। उनके परिवार में पत्नी, बेटा और बेटी हैं। बेटी गरिमा आर्या ने डीएल डीएवी मॉडल स्कूल शालीमार बाग से 12वीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। उसके बाद हंसराज कॉलेज से इकोनॉमिक्स ऑनर्स किया। फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी की लॉ फैकल्टी से एलएलबी और 2022 में एलएमएल की पढ़ाई पूरी की। साल 2019 में गरिमा लाइब्रेरी में पढ़ाई कर रहीं थीं कि तभी कुछ सीनियर्स जज बनने पर खुशी मनाते हुए उन्हें मिठाई खिलाने के लिए आए। उसी दिन गरिमा ने भी अंदर से प्रण कर लिया कि एक दिन मुझे भी जज बनना है। बस फिर क्या था गरिमा ने दिन-रात एक कर दिया। लगातार हरियाणा, दिल्ली और उत्तराखंड में जज की परीक्षा दी। हरियाणा में 3, दिल्ली में 21 और उत्तराखंड में वह 13 अंक से चूक गईं, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। इसी साल फरवरी में यूपी ज्यूडिशियरी की परीक्षा में हिस्सा लिया। प्रारंभिक परीक्षा पास करने पर मई में मुख्य परीक्षा पास की और बीते 23 अगस्त को साक्षात्कार हुआ। गत 30 अगस्त को जन्मदिन के दिन उन्हें एक सीनियर ने फोन पर बताया कि लड़की तू जज बन गई है। शायद किसी के लिए भी जन्मदिन पर इससे बड़ा कुछ और तोहफा नहीं हो



दिल्ली पुलिस में एएसआई सत्य ब्रह्म अपनी जज बेटी गरिमा आर्या के साथ।

सकता कि आप जीवन में तरक्की की सीढ़ी चढ़ जाएं। पास होने की खबर सुनकर एकाएक गरिमा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, लेकिन उन्होंने रिजल्ट के लिए पहले पीडीएफ डाउनलोड की और तसल्ली होने पर अपने माता-पिता को सूचना दी। गरिमा ने बताया कि उनके पिता ने स्वयं एलएलबी की पढ़ाई की हुई थी जिनका उन्हें पूरा सहयोग मिला। उनके अलावा एक सीनियर कमल यादव ने भी समय-समय पर उन्हें एग्जाम क्रेक करने के फॉर्मूले और एग्जाम का पैटर्न समझाया कि मुख्य परीक्षा की तैयारी किस प्रकार करनी है आदि। सत्य ब्रह्म बताते हैं कि गरिमा बचपन में जब गांव के स्कूल में पढ़ती थी तो वहां पर बच्चे दरी पर बैठकर पढ़ते थे, लेकिन गरिमा उस समय हठ करती थी कि वह दरी पर नहीं, बल्कि बेंच पर बैठकर ही पढ़ेगी। उसकी बचपन की जिद का सपना अब साकार हो गया। एक एएसआई की बेटी ने देखा सपना पूरा कर दिया।